उदारवाद LIBERALISM.

उदारवाद मूलतः पुनर्जागरण प्रसूत बौद्धिक चेतना और वैज्ञानिकता तथा व्यक्तिवादी चिन्तन का परिणाम है। धर्म सुधार आन्दोलनों और पुनर्जागरण का इस पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ा।

परिभाषाएं – सारटोरी – " मोटे तौर पर उदारवाद व्यक्तिगत स्वतंत्रता न्यायिक सुरक्षा तथा संवैधानिक राज्य का सिद्धांत एवं व्यवहार है। "

हाब हाउस – " उदारवाद ने विभिन्न प्रकार की स्वतंत्रताओं के सम्बन्ध में सामन्तवाद की आलोचना की। उदारवाद का सम्बन्ध इस धारणा से है कि समाज का निर्माण व्यक्ति की स्वयं की शक्तियों के आधार पर कुशलतापूर्वक किया जा सकता है और केवल इसी आधार पर सच्चे समाज का निर्माण हो सकता है।"

वास्तव में उदारवाद का जन्म राज्य के विरुद्ध व्यक्तिगत स्वतंत्रता के रूप में हुआ और इसी रूप में इसका विकास हुआ। इसने व्यक्तिगत स्वतंत्रता की मांग दो रूपों में की - 1- आर्थिक क्षेत्र में

2- राजनीतिक क्षेत्र में।

इन दोनों ही क्षेत्र में निर्बाध व्यक्तिगत स्वतंत्रताओं ने कई समस्याएं पैदा की। जिसके कारण इस पर प्रतिबन्ध लगाने और प्रतिबन्ध न लगाने की बहस प्रारम्भ हुई। जिसके कारण हम उदारवाद को विकासात्मक दृष्टि से दो भागों में रखते हैं -

1- नकारात्मक उदारवाद
2- सकारात्मक उदारवाद.

1. नकारात्मक उदारवाद – NEGETIVE LIBERALISM -

हॉब्स, लॉक, मिल, बेंथम, स्पेंसर आदि के विचारों को हम इस श्रेणी में ले सकते हैं।

इसकी मूल मान्यताएं हैं -

1- व्यक्ति की स्वतंत्रता पर कोई हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए।
2- व्यक्ति के विचार, भाषण और लेखन पर कोई रोक-टोक

नहीं होनी चाहिए।

3 - आर्थिक क्षेत्र में व्यक्ति की आर्थिक गतिविधियों पर कोई रोक टोक नहीं होनी चाहिए।

4 - वस्तुओं के दाम, ब्याज की दर, और उत्पादन की मात्रा आदि पर अपेक्षतया रोक टोक नहीं होनी चाहिए और यह मांग एवं आपूर्ति पर तय होना चाहिए बाजार की ताकतों के द्वारा। 5 - जो राज्य कम से कम से कम कार्य करे वही सर्वोत्तम

6 - विधि के शासन द्वारा राज्य के कार्यों को सीमित करना।

7 - व्यक्ति के संवैधानिक अधिकारों द्वारा राज्य की स्वेच्छाचारिता और कार्यों पर रोक।

सकारात्मक उदारवाद — POSITIVE LIBERALISM

19वीं सदी के शुरुआत तक पूंजीवाद काफी विकसित हो गया था। साथ ही इसके दुष्परिणाम भी आने लगे थे। अमीर अधिक अमीर और गरीब अधिक गरीब हो रहे थे। मिचले हबर्ट की आर्थिक स्थिति भयावह हो रही थी। Karl Marx के मार्क्सवाद ने पूंजीवाद पर प्रबल प्रहार किए। परिणामतः व्यक्ति की अबाध स्वतंत्रता पर रोक लगाने की स्वाभाविक मांग उठने लगी। इसे ही हम सकारात्मक उदारवाद के नाम से जानते हैं। T.H. GREEN को इसका जनक कह सकते हैं। इसके अलावा, लास्की, हाबहाउस, चेफी, रस्कोपाउण्ड, मैकाइवर, बार्कर, बोस आदि को इसका समर्थक माना जाता है -

मूल मान्यताएं —

1 - व्यक्ति की स्वतंत्रता पर उचित प्रकार के प्रतिबन्ध होने चाहिए।

2 - व्यक्ति की स्वतंत्रता विशेषकर आर्थिक स्वतंत्रता पर सम्पूर्ण समाज के संदर्भ में आवश्यक प्रतिबंध होने चाहिए।

3 - व्यक्ति के नैतिक विकास की जिम्मेदारी राज्य पर है।

4 - अतः राज्य का कार्य है व्यक्ति के नैतिक विकास में आने वाली बाधाओं को दूर करना।

5 - अतः यदि वैयक्तिक स्वतंत्रता उसके विकास में बाधक है तो राज्य को यह अधिकार है कि वह उस पर प्रतिबंध लगाए।

Hindering Hindrances for good life. ग्रीन का यह मत इसका प्रधान आधार है।

6- व्यक्ति स्वतंत्रता और अधिकार पूरक हैं। अर्थात् एक का अधिकार दूसरे पर प्रतिबन्ध है।

7- यह राज्य के कार्यों के विस्तार के पक्ष है अर्थात् राज्य को अधिक से अधिक कार्य करने चाहिए।

8- सकारात्मक उदारवाद ने ही "लोक कल्याणकारी राज्य" की अवधारणा का मार्ग प्रशस्त किया।

9- यह सम्पत्ति, उत्पादन और साधनों के अधिकतम वितरण में राज्य की भूमिका को आवश्यक मानता है और उसे खुला छोड़ना नहीं चाहता।

प्रश्न - उदारवाद की परिभाषा दीजिए.

प्रश्न - सकारात्मक उदारवाद का अर्थ बताइए।

प्रश्न - नकारात्मक उदारवाद का अर्थ बताइए।

प्रश्न - नकारात्मक उदारवाद की किन्हीं चार मान्यताओं को लिखिए।

प्रश्न - सकारात्मक उदारवाद की मूल मान्यताएं बताइए।

प्रश्न - नकारात्मक उदारवाद के प्रमुख विचारकों के नाम बताएं

प्रश्न - सकारात्मक उदारवाद के प्रमुख विचारकों के नाम बताएं.

नकारात्मक उदारवाद का अर्थ - नकारात्मक उदारवाद आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में व्यक्ति की स्वतंत्रता और गतिविधियों को बिना रोकटोक जारी रखना चाहता है।

सकारात्मक उदारवाद का अर्थ - यह आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में व्यक्ति की स्वतंत्रता और गतिविधियों पर उचित प्रकार के प्रतिबंधों को आवश्यक मानता है।